तिथि
25.4.2020

शैक्षिक क्रम
Topic Sl. No. – 38 & 39

स्नातक प्रथमवर्ष
हिन्दी (प्रतिष्ठा)
B.A Hindi (Hons.)
D1
&
स्नातक प्रथमवर्ष
(आनुषंगिक)
B.A (Subs.) D2

प्रगतिवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1) मानवतावाद –
प्रगतिवादी कवियों के दो समुदाय हैं – एक तो अपनी मातृभूमि के लिए लिखता है और अपने ही देश के किसानों, मज़दूरों आदि का उद्धार करना चाहता है। दूसरा समुदाय समस्त मानवता का उद्धार चाहता है। उसे संसार के सब पीड़ित लोगों से प्यार एवं सहानुभूति है। उसके लिए हिन्दू-मुसलमान, पारसी, सिक्ख आदि सब मानव होने के कारण बराबर हैं।

2) वेदना और निराशा –
छायावाद और प्रगतिवाद दोनों में वेदना का चित्रण हुआ है किन्तु प्रगतिवाद की वेदना वैयक्तिक और सामाजिक है, जब कि छायावाद में उसका वैयक्तिक रूप अधिक है। प्रगतिवादी संघर्षों से जूझता हुआ भी निराश नहीं होता। उसे विश्वास है कि वह इस सामाजिक वैषम्य को दूर करने के लिए सफल होगा।

3) नारी-चित्रण –
प्रगतिवादी कवि के लिए मज़दूर तथा किसान

Scanned with CamScanner

के समान नारी भी शोषित है, जो कि युग-युग से सामंत-वाद की कारा (जेल) में पुरुष-दासता की लोहे की श्रृंखला-ओं से बँधी हुई है। अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व खो चुकी है और वह केवल मात्र रह गई है पुरुष की वासना-तृप्ति का उपकरण। उसमें आत्मा की उज्ज्वलता पुरुष की दृष्टि से एकदम विलुप्त हो गई है। पंत के शब्दों में—

"योनि नहीं है रे नारी वह भी मानवी प्रतिष्ठित।
उसे पूर्ण स्वाधीन करो वह रहे न नर पर अवसित।"

9) सामाजिक जीवन का यथार्थ-चित्रण-

प्रगतिवादी-काव्य में निम्न-वर्ग के जीवन की प्रतिष्ठा हुई। इससे पहले साहित्य में मध्यवर्ग तथा उच्चवर्ग का जीवन प्रतिबिम्बित हुआ था। आज के वैज्ञानिक युग के कवि के सम्मुख अनेक प्रबल भौतिक समस्याएँ हैं अतः इसे आध्या-त्मिकता की चिंता नहीं। आज उसे व्यक्ति और समाज के कटु सत्यों के सामने ऐश्वर्य-विलास फीके लगते हैं। जीवन के अनाचार, भूख की पुकार और पीड़ित के हाहाकार ने उसे व्यथित बना दिया है। भारत के गाँवों का वर्णन करते हुए कवि सुमित्रानंदन पंत लिखते हैं-

"यह तो मानव लोक नहीं है, यह है नरक अपरिचित।
यह भारत की ग्राम सभ्यता संस्कृति से निर्वासित।"

Scanned with CamScanner

10) सामयिक समस्याओं का चित्रण -

~~प्रगतिवादी - काव्य में~~

~~निम्नवर्ग के जीवन की~~

10) सामयिक समस्याओं का व्यचित्रण -

प्रगतिवादी कवि देश और विदेशों की सामयिक समस्याओं के प्रति भी अत्यंत सजग रहा है। उसके लिए विश्व संस्कृति और मानवतावाद की प्रतिष्ठा के लिए ऐसा करना आवश्यक भी था। हिन्दु-स्तान-पाकिस्तान-विभाजन, कश्मीर-समस्या, बंगाल का अकाल आदि का इन कवियों ने मार्मिक वर्णन किया है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के निधन (मृत्यु) पर प्रगतिवादी कवि की आकुल अंतरात्मा फूट निकली-

"बापू मेरे...
अनाथ हो गई भारतमाता
अब क्या होगा...।"

11) कला संबंधी मान्यता

प्रगतिवादी कलाकार जितना अनुभूति के संबंध में चिंतित है उतना अभिव्यक्ति-पक्ष के संबंध में नहीं। संघर्षकालीन कवि को क्रांति की भावना या कलात्मकता में से एक को अपनाना और उसकी रक्षा करनी है। प्रगतिवादी कवि को क्रांति की भावना के प्रचार के लिए कलात्मकता का बलिदान देना पड़ा,

Scanned with CamScanner

क्योंकि इसके बिना वह निम्न वर्ग तक पहुँच ही नहीं सकता था। प्रगतिवादी काव्य में सहजता और सरलता को स्थान दिया गया है। उसमें किसी प्रकार का आडंबर नहीं है। इस साहित्य की भाषा सरल और सुबोध है। मुक्तक और अतुकान्त छंदों के साथ इन्होंने गीतों और लोकगीतों की शैली का भी प्रयोग किया है।

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि यदि एक ओर यह माना जाता है कि प्रगतिवादी-काव्य में एकांगीता अधिक है, जीवन की विविधता और अनेकरूपता कम तब भी इस साहित्य का अपना महत्व भी है। यह जीवन के भौतिक पक्ष को अभ्युत्थान करना चाहता है।

— डॉ० आरती प्रसाद
सह प्राचार्य, हिन्दी-विभाग
रमन नारायण महाविद्यालय,
पण्डौल, मधुबनी
मो० नं०- 9955839898

Scanned with CamScanner